कक्षा : आठवीं– जैन धर्म भूषण (परीक्षा 23 जुलाई, 2023)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **15x1 = (15)**

(a) अदत्त का अर्थ हैं-
(क) आज्ञा से लेना (ख) बिना आज्ञा के लेना
(ग) नहीं लेना (घ) दान नहीं देना (ख)

(b) जरायुज के अन्तर्गत नहीं आते हैं-
(क) गाय (ख) भैंस
(ग) मनुष्य (घ) हाथी (घ)

(c) चिट्ठमाणो का अर्थ है-
(क) चलता हुआ (ख) खड़ा रहता हुआ
(ग) बैठता हुआ (घ) सोता हुआ (ख)

(d) कट्ठेण का हिन्दी अर्थ होता है-
(क) काष्ठ से (ख) कठिनता से
(ग) काटने से (घ) कट्टरता से (क)

(e) 'इंगाल' प्राकृत शब्द का हिन्दी अर्थ होता है-
(क) ईगल (ख) अंगारा
(ग) प्यार (घ) लकड़ी (ख)

(f) गर्भज मनुष्य की काल की अपेक्षा उत्कृष्ट स्थिति अवसर्पिणीकाल में चौथा उतरते और पाँचवाँ लगते होती है-
(क) 2 पल्योपम (ख) 3 पल्योपम
(ग) एक सौ वर्ष (घ) एक सौ वर्ष झाझेरी (घ)

(g) युगलिक मनुष्य में योग पाए जाते हैं-
(क) 9 (ख) 10
(ग) 11 (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

(h) असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में संस्थान पाया जाता है-
(क) समचौरस (ख) हुण्डक
(ग) वामन (घ) कुब्जक (ख)

(i) ज्योतिषि तथा पहले दूसरे देवलोक में लेश्या पायी जाती है-
(क) कापोत (ख) तेजो
(ग) कापोत एवं तेजो (घ) पद्म (ख)

(j) सुमेरू पर्वत कितने योजन जमीन के अन्दर नींव रूप में हैं-
(क) एक हजार (ख) 99 हजार
(ग) एक हजार एक (घ) दस हजार (क)

(k) आयताकार पर्वतों में कौनसा पर्वत श्रेष्ठ है-
(क) विषध (ख) निषध
(ग) रूचक (घ) इनमें से कोई नहीं (ख)

(l) सब शब्दों में किसका गर्जन प्रधान है-
(क) मेघ (ख) सिंह
(ग) हाथी (घ) घोड़ा (क)

(m) आराधना के कितने प्रकार हैं-
(क) 2 (ख) 3
(ग) 4 (घ) 5 (ख)

(n) आराधक होने पर जीव मनुष्य संबंधी कितने भव करता है-
(क) 15 (ख) 8
(ग) 7 (घ) 6 (ख)

(o) कौनसे सूत्र के छठे पद में वर्णन है कि नवग्रेवेयक में दो प्रकार के मनुष्य जाते हैं-
(क) उत्तराध्ययन (ख) दशवैकालिक
(ग) पन्नवणा (घ) भगवती (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1=(15)**

(a) दशवैकालिक सूत्र के चतुर्थ अध्ययन के दो नाम जीवनिकाय और धर्म है। (नहीं)
(b) भयंकर अंधकार में जैन साधु प्रकाश के किसी साधन का उपयोग कर सकते हैं। (नहीं)
(c) अयतना से चलता हुआ संयमी प्राण भूत की हिंसा करता है। (हाँ)
(d) उपयोग पूर्वक क्रिया नहीं करने से अध्यवसाय शुभ नहीं होते। (हाँ)
(e) नारकी और देवों में दस प्राण पाये जाते हैं। (हाँ)
(f) बादर वायुकाय के पर्याप्ता को छोड़कर शेष वायुकाय के तीन भेदों में तीन ही समुद्घात पायी जाती हैं। (हाँ)
(g) बेइन्द्रिय की उत्कृष्ट अवगाहना 10 योजन होती है। (नहीं)
(h) बेइन्द्रिय में पाँच उपयोग पाए जाते हैं। (हाँ)
(i) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में दो ज्ञान और तीन अज्ञान पाए जाते हैं। (नहीं)
(j) प्रत्याख्यानावरण क्रोध के कारण व्यक्ति श्रावक व्रत धारण नहीं कर पाता। (नहीं)
(k) क्रोध को घुन की उपमा से उपमित किया गया है। (हाँ)
(l) क्षत्रियों में दान्तवाक्य नामक चक्रवर्ती प्रधान हैं। (हाँ)
(m) मृगों में सिंह प्रधान हैं। (हाँ)
(n) तीर्थंकर चरित्र में भगवान ऋषभदेव के 13 भवों के वर्णन में उल्लेख मिलता है कि वे छठे भव में युगलिक मनुष्य बनें। (नहीं)
(o) वीरस्तुति में कुल 30 गाथाएँ हैं। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1=(15)**

(a) भूमि को फोड़कर पैदा होने वाला जीव	(क) औपपातिक	टिड्डी
(b) बिना माता-पिता के संयोग के पैदा होने वाला जीव	(ख) टिड्डी	कीड़ा
(c) कोथली में लिपटा हुआ पैदा होने वाला जीव	(ग) जूँ-लीख	चमगादड़
(d) पसीने से उत्पन्न जीव	(घ) चमगादड़	जूँ-लीख
(e) देव नारकी जीव	(च) कीड़ा	औपपातिक
(f) हड्डियों की रचना विशेष	(छ) उपपात	संहनन
(g) नामकर्म के उदय से होने वाली शरीर की रचना विशेष	(ज) संहनन	संस्थान
(h) जीव जितनी संख्या में उत्पन्न हो, उसे कहते हैं	(झ) संस्थान	उपपात
(i) सूर्य विमानवासी देवों की उत्कृष्ट स्थिति	(य) आधा पल्योपम	एक पल्योपम एक हजार वर्ष
(j) नक्षत्र विमानवासी देवों की उत्कृष्ट स्थिति	(र) एक पल्योपम एक हजार वर्ष	आधा पल्योपम
(k) णिरामगंधे का अर्थ	(ल) आत्म स्वरूप में स्थित	विशुद्ध चारित्र की-पालना करने वाला
(l) ठियप्पा का अर्थ	(व) आयु रहित	आत्म स्वरूप में स्थित
(m) अणाऊ का अर्थ	(क्ष) विशुद्ध चारित्र की पालना करने वाला	आयु रहित
(n) ज्ञान दर्शन चारित्र की आराधना के भव	(त्र) 3	8
(o) क्षपक श्रेणी करने वाले छठे गुणस्थानवर्ती में उत्कृष्ट आराधना	(ज्ञ) 8	3

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1=(15)**

(a) आघात, टकराहट और अग्नि से मैं अचित्त होती हूँ। — वायु

(b) मैं महाव्रती होने से पूर्ण अहिंसक हूँ। — जैन मुनि

(c) मैं ग्यारह अंगों में वह अंग शास्त्र हूँ जिसके चतुर्थ अध्ययन में प्राण, भूत, जीव और सत्व की हिंसा नहीं करना धर्म कहा है। — आचारांग

(d) खान आदि में रहे हुए पाषाण आदि का बढ़ना मेरी सजीवता का लक्षण है। — बादर पृथ्वीकाय

(e) मैं विनाश होने वाला हूँ मेरे औदारिक आदि पाँच भेद हैं। — शरीर

(f) मन होने से मैं कहलाता हूँ। — संज्ञी

(g) मेरे सेवन से शरीर पुष्ट होता है। — आहार

(h) जिसके सद्भाव से मैं जीवित रहता हूँ। — प्राण

(i) मैं क्रोध विजय से प्राप्त होता हूँ। — क्षमाभाव

(j) मैं एक ऐसा उपचार हूँ जो लोभ रूपी भयंकर रोग को समाप्त कर सकता हूँ। — संतोष

(k) मैं सब पक्षियों में श्रेष्ठ हूँ। — वेणुदेव गुरुड

(l) मैं सब सभाओं में श्रेष्ठ हूँ। — सुधर्मा सभा

(m) मै सब योद्धाओं में प्रधान हूँ। — विश्वसेन नामक चक्रवर्ती

(n) मैं एक ऐसा सूत्र (आगम) हूँ जिसमें उल्लेख है कि सर्वार्थसिद्ध विमान से आने के बाद मनुष्य भव में केवल बोधि को प्राप्त किया। — सुखविपाक सूत्र

(o) मैं एक ऐसा सूत्र(आगम)हूँ जिसमें उल्लेख है कि चार अनुत्तर विमान से आया हुआ जीव मनुष्य भव में 8-16-24 यावत संख्याता द्रव्येन्द्रियाँ कर सकता है। — पन्नवणा सूत्र

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **8x2=(16)**

(a) वायुकायिक जीवों के पाँच नाम लिखिए।

उ. उत्कलवात, मंडलवात, तनवात, घनवात, झंझावात।

(b) त्रस जीव के लक्षण बताइए।

उ. सामने आना, पीछे जाना, संकोच, प्रसारण, शब्द करना, भ्रमण करना, भयभीत होना, भागना और आगति-गति का ज्ञान होना, ये त्रस जीवों के लक्षण है।

(c) जीव अजीव को सही रूप में जान लेने पर साधक क्या जान लेते हैं ?

उ. जब साधक जीव-अजीव दोनों का सही रूप जान लेता है, तब वह उन जीवों की नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देव रूप विविध गतियों को भेद-प्रभेद के साथ जान लेता है।

(d) समुद्घात द्वार को समझाते हुए इसके प्रथम दो भेद लिखिए।

उ. मूल शरीर को छोड़े बिना जीव के प्रदेशों का बाहर निकलना समुद्घात कहलाता है।
इसके प्रथम दो भेद-1. वेदनीय और कषाय है।

(e) नारकी एवं देवताओं में वेद द्वार को समझाइए।

उ. नारकी में एक नपुंसक वेद पावे। भवनपति, वाणव्यन्तर ज्योतिषी और पहले दूसरे देवलोक के वेद पावे दो- स्त्रीवेद और पुरुषवेद। तीसरे देवलोक से सर्वार्थसिद्ध विमान तक एक वेद पावे-पुरुषवेद।

(f) पाँच स्थावर और असन्नी मनुष्य में पर्याप्ति बताइए।

उ. पाँच स्थावर में चार पर्याप्ति पावे-आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति और श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति। असन्नी मनुष्य चौथी पर्याप्ति का अपर्याप्ता रहते हुए ही मर जाता है।

(g) से पन्नया.....देवाहिवई जुईमं। इस गाथा को पूर्ण कीजिए।

उ. से पन्नया अक्खयसायरे वा, महोदही वावि अणंतपारे।
अणाइले वा अकसाइ मुक्के, सक्के व देवाहिवई जुईमं।।

(h) उत्कृष्ट आराधना की अपेक्षा से दर्शनाराधना व चारित्र आराधना का अर्थ एवं फल समझाइए।

उ. दर्शनाराधना अर्थ-उपशम क्षयोपशम में उत्कृष्ट खप (पुरुषार्थ)
दर्शनाराधना फल- क्षायिक सम्यक्त्व
चारित्राराधना अर्थ- सामायिकादि 5 चारित्रों में उत्कृष्ट खप (पुरुषार्थ)
चारित्राराधना फल- क्षीण वीतरागता।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) पच्छावि ते पयाया, खिप्पं गच्छंति अमरभवणाइं।

उ. जेसिं पिओ तवो संजमो य, खंती य बंभचेरं य। उक्त गाथा का भावार्थ लिखिए।
भावार्थ- पिछली अवस्था में दीक्षा ग्रहण करके भी वे साधक शीघ्र स्वर्गलोक को प्राप्त करते हैं, जिनको तप, संयम, क्षमा और ब्रह्मचर्य के सद्गुण प्रिय हैं। साधना के फलस्वरूप वे साधक देवगति के सुफल प्राप्त करते हैं।

(b) सुहसायगस्स.....तारिसगस्स।। इस गाथा को पूर्ण करके लिखिए।

उ. सुहसायगस्स समणस्स, सायाउलगस्स निगामसाइस्स।
उच्छोलणापहोयस्स, दुल्लहा सुगई तारिसगस्स।।

(c) तीन विकलेन्द्रिय और असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की स्थिति बताइए।

उ. सभी की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट बेइन्द्रिय की 12 वर्ष, तेइन्द्रिय की 49 अहोरात्रि, चौरेन्द्रिय की छह माह की। असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के 5 भेद की स्थिति- जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट जलचर की 1 करोड़ पूर्व, स्थलचर की 84 हजार वर्ष, खेचर की 72 हजार वर्ष, उरपरिसर्प की 53 हजार वर्ष, भुजपरिसर्प की 42 हजार वर्ष की।

(d) सिद्ध भगवान की अवगाहना, स्थिति एवं गति आगति समझाइए।

उ. अवगाहना- आत्म प्रदेशों की अवगाहना जघन्य एक हाथ आठ अंगुल, मध्यम चार हाथ सोलह अंगुल और उत्कृष्ट 333 धनुष-32 अंगुल।
स्थिति- एक सिद्ध भगवान की अपेक्षा सादि अनन्त और सभी सिद्ध भगवन्तों की अपेक्षा अनादि अनन्त।
गति-आगति- आगति मनुष्य गति और एक दण्डक से, गति-नहीं।

(e) वीर स्तुति की प्रथम-द्वितीय गाथा की विषय वस्तु संक्षेप में लिखिए।

उ. प्रथम व द्वितीय गाथा में जम्बूस्वामी द्वारा भगवान महावीर के ज्ञान-दर्शन-शील आदि के बारे में जानने के लिए जिज्ञासा रूप प्रश्न किया है।

(f) खेयन्ने से कुसले महेसी, अणंतनाणी य अणंतदंसी।
जसंसिणो चक्खुपहे ठियस्स, जाणाहि धम्मं च धिइं च पेहि। इसका भावार्थ लिखिए।

उ. भगवान महावीर खेदज्ञ (सभी प्राणियों के दुःख के ज्ञाता) अथवा क्षेत्रज्ञ (सम्पूर्ण क्षेत्र के ज्ञाता) एवं कुशल (कर्म काटने में निपुण) महर्षि थे। वे अनन्तज्ञानी एवं अनन्तदर्शी थे। वे यशस्वी थे एवं भव्य जीवों के चक्षु पथ पथ में स्थित थे। तुम उनके धर्म और धेर्य को देखों और जानों, विचारो।

(g) मान कषाय से होने वाली कोई तीन हानियाँ लिखिए।

उ. नोटः- इनमें से कोई तीन मान्य-

1. इससे दूसरों के प्रति तिरस्कार, द्वेष और नीचा दिखाने की भावना जागृत होती है।

2. कला, बुद्धि आदि जिस-जिस क्षेत्र में व्यक्ति अपने को निपुण समझने लगता है, उस-उस क्षेत्र में उसकी आगे बढ़ने की क्षमता घटने लगती है।

3. ईर्ष्या, द्वेष, कलह, लालच, ममत्व आदि अनेक बुराइयाँ धीरे-धीरे बढ़ती रहती हैं, जिसके फलस्वरूप उत्तरोत्तर दुःख बढ़ता है।

4. मान से विनय, सेवा, सहकारिता, नम्रता आदि गुण नष्ट होते हैं।

(h) माया-उत्पत्ति के कोई तीन कारण लिखिए।

उ. नोटः- इनमें से कोई तीन मान्य-

1. माया माया के लिए- व्यापार मे झूँठ, ठगाई, खोटा नफा, मिलावट, करों की चोरी, विश्वासघातादि सारे कुकृत्य,धन (माया) कमाने की भावना से ही किये जाते हैं।

2. भविष्य की हानि का विचार न होने से- झूँठ, चोरी, ठगी आदि में अगर पकड़ा गया तो राज्य अथवा समाज में कैसी हालत होगी, यह नहीं सोचने से।

3. मान के लिए माया- अपने मान, प्रतिष्ठा, अहंकारादि के पोषण के लिए एवं अपने दुर्गुणों को छिपाकर गुणी कहलाने के लिए भी माया का सेवन किया जाता है।

4. पूर्व संस्कारों से- कोई जन्तु जैसे छिपकली, बिल्ली, चीता, बगुला तथा कई मानव पूर्व जन्म के संस्कारों के कारण जन्म एवं स्वभाव से ही कपटी होते हैं।

5. दूसरों को गुमराह करने के लिए- अपनी स्थिति चाहे वह धन, स्वभाव या दुर्गुण सम्बन्धी हो, वह दूसरों को मालूम न पड़ जाय, इसी कारण असली स्थिति को छिपाकर झूँठा दिखावा किया जाता है।